शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

अधिगम क्षमता पर बालक शिक्षक सम्बन्धों का प्रभाव

सुजल पाल
एम.एड., नेट शिक्षा शास्त्र

डॉ0 मिली पाल
एम.ए., पीएच.डी.
Email:milipal5151@yahoo.com

आदिकाल से भारतीय समाज में गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा एवं भक्ति भाव है। गुरू शब्द दो अक्षर से बना है। गु+रू। 'गु' का अर्थ 'अन्धकार' और 'रू' का अर्थ 'दूर करने वाला' अर्थात गुरू वह है जो अज्ञान के अन्धकार को दूर करे। दूसरे शब्दों में गुरू का शाब्दिक अर्थ है ''वह व्यक्ति जो गौरव अथवा सम्मान का पात्र और अधिकारी है।'' गुरू वह है जो अपनी इन्द्रियों का स्वामी है, उसका तन–मन शुद्धता से परिपूर्ण हो, सच्चा, मृदुभाषी और बुराईयों से परे हो। जो कर्तव्य परायण, दयावन और उदात्त हो। विवेक चूड़ामणि में आदिशंकर की सुन्दर पंक्ति 'सर्वशक्तिमान; ने हमें तीन अवसर प्रदान किये हैं– हम मनुष्य के रूप में जन्म लें, सत्य का साक्षात्कार करें और उससे भी बढ़कर यह कि आदर्श गुरू प्राप्त करें। भारतीय समाज में आदर्श गुरू को चित्रित किया गया है। गुरू एवं शिष्य के मध्य अटूट स्नेह होता है, जैसा कि शिशु का माता से भारत में गुरू को ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश माना गया है।

गुरू ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरू र्देवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रहम तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू और शिष्य के बीच सम्बन्ध की यही भावना होनी चाहिए। गुरू एक व्यक्ति नहीं बल्कि सम्पूण्र रचना प्रक्रिया का घटक होता है। एक कुम्हार की तरह सुन्दर घड़े, सकोरे, सुराही की भाँति यथोचित, यथा योग्य, क्षमता` अनुरूप बाल मिट्टी को आकार देता है। गुरू समाज की वह महत्वपूर्ण बड़ी होता हे, जिससे सृजनात्मक श्रृंखला का निर्माण समीव हो पाता है। इसके साथ ही साथ जिस पौधे को खाद, पानी देकर वटवृक्ष बनाने की शैक्षिक प्रक्रिया की जाती है वह पौधा ज्यादा महत्वपूर्ण है। गुरू षिश्य के आज्ञान रूपी तिमिर को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। शिष्य को अपने गुरू पर अटूट श्रृद्धा एवं विश्वास होना चाहिए। विनय, विनम्रता एवं श्रृद्धा के बिना वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षक को एक दार्शनिक मित्र एवं पद प्रदर्शक माना है। भक्तिकाल में कबीरदास जी ने गुरू के स्वरूप की विवेचना करते हुए उसे संध्या हितैषी माना है और उसके स्थान को ईश्वर से बढ़कर माना है।

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागो पाँव।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गहरा प्रभाव डालते हैं। तीन वर्ष का शिशु नर्सरी कक्षा में प्रवेश लेता है तो वह अपने

शिक्षक द्वारा कही गयी बात को आसानी से सीख लेता है और उसे अक्षरशः सत्य मानता है। शिक्षक सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण कड़ी होता है। शिक्षक और शिष्य के बीच अच्छी समझ होनी चाहिए। शिक्षक को बाल–मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, जिससे वह बाल कके मनोभाव को आसानी से समझकर उसकी कठिनाईयों को दूर करे और शिक्षण कौशल को उपयोग करते हुए बालक को शिक्षा प्रदान करे। उचि शैक्षिक कौशल का उपयोग करके प्रदान किया गया ज्ञान अधिक स्थायी और बच्चों पर अधिक स्थाय प्रभाव डालने वाला होता है। शिक्षण क्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक और छात्र दोनों को दोनों द्वारा निम्न बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए :–

1. छात्रों को समय–समय पर उत्प्रेरक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
2. पाठ्यचर्या, रूपरेखा, नीत निहितार्थ एवं पाठों का विश्लेषण समय–समय पर करना चाहिए।
3. शिक्षक एवं छात्रों के बीच प्रभावशाली संवाद होना चाहिए।
4. बच्चे शिक्षक का अनुसरण करते हैं, इसलिए शिक्षक को अपनी भाषा शैली, हाव–भाव, नैतिक व्यवहार, ड्रेस आदि व्यवसाय के अनुकूल बनाना चाहिए, जो समाज के लिए आदर्श हो।
5. शिक्षक का व्यवहार कक्षा में मित्रव तथा सहयोगी होना चाहिए।
6. बच्चों से रूबरू होने, उनके विचारों को सुनने एवं समझने के लिए समय–समय पर वाद–विवाद, वार्तालाप पाठ–सहगामी क्रियाएँ, प्रोजेक्ट कार्य, करके सीखना, प्रयोग द्वारा सीखना आदि क्रिया सम्पनन किया जाना चाहिए। इसका शिक्षण प्रक्रिया पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
7. बच्चों को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक संदर्भ में समझाना चाहिए।
8. होपिन के अनुसार–''स्कूल हमारे बच्चों के लिए है स्कूल में वही होना चाहिए जो बच्चे सीख सकें।''
9. शिक्षक और छात्रों के बीच परस्पर सम्पर्क का कार्य होना चाहिए।
10. शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नई तकनीकें, नये अनुसंधान हो रहे हैं। शिक्षक को इसके सम्पर्क में रहना चाहिए और इन विधि का उपयोग अपनी शिक्षण विधि में करना चाहिए।
11. सीखने की क्रिया प्रभावशाली बनाने के लए अनुशासन का होना अत्यन्त आवश्यक है। नियमों का उल्लंघन करने पर छात्रों को दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए, लेकिन ये दण्ड प्रतिकात्मक होने चाहि, कठोर नहीं, नहीं तो छात्र कक्षा से दूर भागेगा।
12. ज्ञान की पाठ्य पुस्तकों के वाह्य ज्ञान के हिस्से को न देकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निमित्त को देखना चाहिए।
13. कक्षा का वातावरण अच्छा होगा तो अधिगम प्रक्रिया काफी सरल हो जाती है।

14. बच्चे कोई चीज तभी सीखते हैं जब उन्हें यह मालूम हो कि जो चीज को सीख रहे हैं उसका फायदा है।

कक्षा में अध्ययन करते समय अधिकांश छात्रों के मस्तिष्क में अन्य हलचल होती है अर्थात् कुछ और सोच रहे होते हैं। इस तरह का अध्ययन किसी चीज को सीखने में तमाम तरह की अड़चन उत्पन्न करती हैं, चाहे कालेज हो या विश्वविद्यालय की परीक्षाएं या प्रतियोगी परीक्षाएं इसके लिए आवश्यक है कि छात्र सबसे पहले सही प्रक्रिया का सही नियम की जानकारी प्राप्त करे लें, जिससे उद्देश्य पूर्ण अध्ययन सम्भव हो सके।

शिक्षक मात्र लिखे हुए वाक्यों एवं पाठों का मात्र भष्यकार ही नहीं होता, बल्कि स्वतंत्र एवं सृजनात्मक इकाई के रूप का भी स्वाद चखता है, यही स्वानुभव के आँच पर पके पाठ, सूचनाएं, बच्चों के जेहन में रच–बस जाती है। यह केवल कापी पर हस्ताक्षर करने या क्लास में हर साल नये बैच को उसी नियम पर लेक्चर देने तक ही सीमित नहीं होता है, बल्कि छात्रों को ऐसी शिक्षा देना, जिसके माध्यम से छात्रों को वर्तमान समय में जीवन के क्षेत्र में कम से कम समस्या का सामना करना पड़े। इसके लिए सबसे पहले छात्रों के विचारों को नींव देने की आवश्यकता है, जिससे वह किसी चीज को ऐसे ढंग से सोच एवं समझे तथा उनको एक साथ रखते हुए तथ्यों को साबित कर सके। अशिक्षित व्यक्ति के साथ आये छात्र को इस तरह से प्रशिक्षण देना कि उसका एक–एक गुण निखर कर उसकी सफलता की राह में उपयोगी बने। शिक्षक को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वह जो कुछ सिखाना चाह रहा है वह प्रत्येक छात्र की समझ में आ जाये। शिक्षक को धैर्य के साथ–साथ बाल मनोविज्ञान को समझने की कला होनी चाहिए, जिससे शिक्षक छात्र के बीच की दूरी कम हो सके। शिक्षक दीपक के समान होता है जो स्वयं जलकर हमारे भविष्य को प्रकाशित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. *टीचर एजूकेशन*– बी0के0 राव
2. शिक्षक अधिगम और विचार के लिए वैकल्पिक आधार– जे0आर0 शर्मा
3. *अध्यापक शिक्षा*– एन0आर0 सक्सेना एवं बी0के0 मिश्रा
4. *शिक्षा मनोविज्ञान*– डॉ0 महेन्द्र कुमार मिश्रा।